

धोरण : 9

हिन्दी

पाठ : 13

नीति के दोहे

स्वाध्याय



**प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में**

**लिखिए :**

**(1) रहीम के अनुसार संपत्ति का महत्त्व क्या है?**

➤ **रहीम के अनुसार संपत्ति का यह महत्त्व है कि उससे दूसरों का भला किया जा सकता है।**

**(2) छोटों का तिरस्कार क्यों नहीं करना चाहिए?**

➤ छोटों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो काम वे करते हैं, वह बड़े नहीं कर सकते।

**(3) सुई का काम कौन नहीं कर सकता?**

➤ सुई का काम तलवार नहीं कर सकती।

**(4) उत्तम प्रकृति का क्या लक्षण है?**

➤ उत्तम प्रकृति का यह लक्षण है कि बुराई के बीच रहकर भी वह अपनी अच्छाई नहीं छोड़ती।

**(5) सीसे क्यों नहीं चाहिए?**

- प्रश्न का कुछ अर्थ नहीं निकलता। अतः इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया।

**(6) माँगने के बारे में रहीम क्या कहते हैं?**

- रहीमजी कहते हैं, कि माँगना मृत्यु समान है।

**प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**

**(1) वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते हैं?**

➤ वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। सरोवर अपना पानी स्वयं नहीं पीते। रहीमजी कहते हैं कि हमें भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। अपनी जमा की गई धन- संपत्ति का उपयोग हमें केवल अपने सुख के लिए नहीं करना चाहिए। हमें उसके द्वारा दूसरों की भलाई भी करनी चाहिए।

**(2) रहीम कड़वे मुखवाले मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते हैं?**

- **कड़वे मुखवाले मनुष्य की प्रकृति कड़वी ककड़ी के समान होती है। कुछ लोगों की जबान कड़वी होती है। वे हमेशा कड़वे बोल ही बोलते हैं। वे यह नहीं सोचते कि उनकी कड़वी वाणी सुननेवालों को कितनी चोट पहुँचाती है।**

ऐसे लोगों का मुँह ककड़ी के मुँह के समान होता है।  
कटुवाणी बोलकर दूसरे के दिल को चोट पहुँचाना  
अपराध है। इसलिए ककड़ी का मुँह काटकर उस पर  
नमक लगाने जैसी सज़ा ककड़ी को दी जाती है, वैसी  
ही सज़ा इन कड़वी जबानवालों को भी देनी चाहिए।



**(3) 'लाख प्रयत्न करने पर भी बिगड़ी हुई बात नहीं बनती' ऐसा रहीमजी किस उदाहरण से समझाते हैं?**

➤ **किसी कारण से बात बिगड़ जाए तो उसे सुधारना बड़ा मुश्किल होता है। इसे समझाने के लिए रहीमजी फटे हुए दूध का उदाहरण देते हैं। फटे हुए दूध से जमाए गए दही में मक्खन बनाने की शक्ति समाप्त हो जाती है।**



फिर उसे कितना भी मथा जाए, उसमें से मक्खन नहीं निकलता। रहीमजी कहते हैं कि, बिगड़ी हुई बात फटे हुए दूध जैसी होती है। उसे सुधारने के लिए कितने भी प्रयत्न किए जाएँ, वह नहीं सुधर पाती।

### प्रश्न 3 आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'रहिम देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।'

- लोग प्रायः बड़ों को महत्त्व देते हैं। समाज में धनीमानी लोगों को आदर-सम्मान दिया जाता है। गरीबों को लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। उपयोगिता की दृष्टि में देखें तो गरीब लोगों का काम भी कम महत्त्व का नहीं होता। किसान, मज़दूर तथा छोटे काम करनेवाले जो देश

की बहुमूल्य सेवा करते हैं, वह ऊँचे तबकेवाले नहीं कर सकते। इसलिए हमें बड़े लोगों को मान देते समय निम्न स्तर के लोगो की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

**(2) चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।**

➤ चंदन के पेड़ पर साँप लिपटे रहते हैं। इसके बावजूद चंदन का पेड़ साँपों के विष से प्रभावित नहीं होता। साँपों के संग से उसकी सुगंधि में कोई अंतर नहीं पड़ता। इसी प्रकार उत्तम स्वभाव के लोग बुरी संगति में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते। वे अपने गुणों से अपराधियों को प्रभावित करके उनका जीवन बदल देते हैं।

**Thanks**



**For watching**